अध्याय 33

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ अपने द्वारा परमेश्वर के लिए शिष्य निर्माण करने के इस पाठयक्रम व समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंपे।

2	**आराधाना** (20 मिनट)	*[परमेश्वर की विशेषताएं]* **परमेश्वर कुम्हार है।**

पढ़ें यशायाह29:16; यिर्मयाह 18:1-10; (रोमियो 9:20-21)

1. एक कुम्हार अपनी मर्जी के अनुसार बर्तन को आकार देता है।

वर्णन करें कि पुराने ज़माने से वर्तमान काल तक कुम्हार किस तरह बर्तनों को आकार प्रदान करते हैं। बर्तन कभी निर्धारित नहीं करता कि कुम्हार बर्तन को किस प्रकार आकार प्रदान करे।

2. परमेश्वर कुम्हार है और हम उसके हाथों में मिटटी के समान हैं।

तीन बातों पर ज़ोर दें।

- परमेश्वर के पास हम में से हर एक को बनाने के लिए अलग योजना है। आप उसके प्रेम (यशायाह 43:4) और उसकी योजनाओं को याद रखें (यिर्मयाह 29:11)।
- यदि आपने बुराई करने के बाद पश्चाताप कर लिया है, तो परमेश्वर अपना विचार बदलकर आपको वह दण्ड नहीं देगा जो उसने पाप के बाद आप पर उण्डेलने का विचार किया था।
- लेकिन यदि आप बुराई करने लगें, तो परमेश्वर अपने विचार बदलकर, आपके लिए बनाई गयी सुन्दर योजना पर फिर से गौर करने लगेगा।

3.'परमेश्वर ने अपना विचार बदल दिया' हम इस बात को किस दृष्टिकोण से देख सकते हैं?

उत्पत्ती 6:5-9 पढें। बाइबल के कई अनुच्छेदों में ऐसा देखने का मिलता है कि परमेश्वर ने अपनी योजना बदल दिया अपने परमेश्वर को लेकर भी अनुमान लगाना कठिन है। परमेश्वर पहले बनायी गयी योजनाओं को पर दुखि:त होता, उन्हें बदलता या उन योजनाओं के प्रति नरम पड़ जाता है (निर्गमन 32:9-14; 1 शमूएल15:11-35; 2 शमूएल 24:15-16; 1 इतिहास 63:9-10;यिर्मयाद 18:7-10)। परमेश्वर के "विचार बदलने" का अर्थ परमेश्वर की अनन्त योजना का बदलना नहीं है। वरन इसका अर्थ है कि परमेश्वर के प्रकाशन और उसकी योजना को पूरा करने के तरीक में बदलाव को दर्शाता है।

(1) कई लोगों के लिए परमेश्वर का परिवर्तन अकल्पनीय है।

कई बार इसका अर्थ पछताना है। लोग पाप के बुरे परिणामों से डरते हैं (लज्जा और दण्ड, सम्पत्ति का नुकसान, खुशी के नुकसान, कीर्ति व शक्ति के नुकसान) लेकिन फिर भी न तो पश्चाताप करते और न हीं पापों को छोड़ देते हैं। कई बार यह दु:ख दिल की गहराई से व सच्चा हाता है। कई लोग वास्तव में अपनी बुराईयों से फिरकर जीवन में फिर कभी उस बुराई को न दोहराने का प्रयत्न करते हैं (2 कुरिन्थियो 7:8-11)।

(2) आप परमेश्वर के बदलाव का अनुमान लगा सकते हा।

परमेश्वर का बदलाव कभी मनुष्यों बदलाव के समान नहीं होता। परमेश्वर का बदलाव या परिवर्तन मनुष्यों या मूर्तियों के समान नहीं होता जिनके बदलने के बारे में अनुमान नहीं लगाया जा सकता। परमेश्वर कभी नहीं बदलता। परमेश्वर हमेशा पवित्र और धर्मी है और यदि लोग पाप करके पश्चाताप नहीं करते तो वह सदैव पाप का दण्ड देता है (निर्गमन 20:5)। लेकिन जब लोग अपने पापों को पश्चात करते हैं,तो परमेश्वर उनके लिए हमेशा दयालु और अनुग्रहकारी बना रहता है। परमेश्वर के चुनाव और उसकी अनन्त योजना में पहले से ही समय समय पर मनुष्यों का उसके प्रति रवैया और लोगों का स्वभाव शामिल था। इसका अर्थ है कि परमेश्वर का बदलाव वास्तव में लोगों के पापों व बुराई के प्रति परमेश्वर की पवित्र व धार्मिक प्रतिक्रिया है। या दूसरे शब्दों में कहें तो परमेश्वर का बदलाव मनुष्य की अधीनता और उसके पश्चाताप के प्रति प्रतिउत्तर है। परमेश्वर का उसकी योजनाओं में पछनाना या बदलाव इतिहास में लोगों के स्वभाव में परमेश्वर के प्रति परिवर्तन होने के नतीजे पर आधारित सर्वश्रेष्ठ व मज़बूत परिवर्तन रूपी प्रतिक्रिया है।

(3) परमेश्वर अपनी दण्डाज्ञाओं को बदल देता है।

दूसरी ओर, यदि लोग अपने पापों से पश्चाताप कर लेते हैं तो वह अपने प्रेम व तरस के तहत लोगों को दण्ड देने का विचार बदल देता है। (यिर्मयाह 18:7-8)।

(4) परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को बदल देता है।

दूसरी ओर, यदि उसकी निज प्रजा बुरे काम करते व उसकी आज्ञाओं का नहीं मानते हैं तो परमेश्वर अपने पवित्र कोध के तहत अपने किये हुए वायदों को लोगां के जीवन में पूरा नहीं करता (यिर्मयाह 18:7-8)। (यिर्मयाह 18:9-10; 2 तीमुथीयुस 2:13, वह बड़ी गम्भीरता के साथ दण्ड देता है, मत्ती 10:33)।

परमेश्वर के वचनों और प्रकाशनों के कामों में,उसकी अनन्त योजना को पूरा किये जाने में बदलाव (जिसे हम परमश्वेर का बदलाव कहते हैं) लाने का उद्देश्य लोगों के जीवन में पश्चाताप लाना तथा अपनी अनन्त योजना को उनके जीवन में पूरा करना है।

आराधना।

परमेश्वर का एक कुम्हार होने के लिए उसकी अराधना करें। एक समूह में तीन तीन लोगों को निर्धारित करते हुए परमेश्वर की आराधना करें।

3	**बाँटें**(20 मिनट)	**(शान्त समय)** **निर्गमन 16:1-19:25**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में बताएं कि अपने दिये गये वचनोंके आधार पर परमेश्वरके साथ एकान्त समय बिताने पर क्या सीख (निर्गमन 16:1-19:25)।

जब कोई व्यक्ति अपने अनुभवों को बांट रहा हो तो उसे गम्भीरता से लें तथा स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**शिक्षाएं** (70 मिनट)	**(आज्ञाकारिता)** **व्यवहारिक अभ्यास**

परिचय। परमेश्वर ने आपको बाइबल, केवल सत्य को जानने के लिए नहीं, बल्कि आपके जीवन को परिवर्तत करने के लिए दी है। बाइबल के सिद्धान्तों को अपने जीवन में इस्तेमाल करने का सबसे बड़ा कारण ज्यादा से ज़्यादा मसीह की समानता में बढ़ना है।

क. परिभाषा: अभ्यास का क्या अर्थ है।

सिखाएं। अभ्यास हमारी ओर से परमेश्वर के लिए वह प्रतिउत्तर है जिसकी परमेश्वर हम से अपेक्षा करता है। इसका अर्थ परमेश्वर के वचनों का पालन करना है। इसका अर्थ उन्नति करने के लिए परमेश्वर के वचनों का इस्तेमाल करना है। मैं दूसरों की बढ़ौतरी या उनके जीवन में बदलाव लाने के लिए भी परमेश्वर के वचनों का इस्तेमाल कर सकता हूँ।

यदि आप भरोसा व आज्ञापालन करें तो परमेश्वर के वचनों को पढ़ना और उसका अध्ययन करना जीवन परिवर्तित करने वाला अनुभव हो सकता है। आपको विश्वास करना होगा कि जो सच्चाई या प्रकाशन आपको प्राप्त हुआ है वह आपके जीवन को बदल देगा। आपको स्वयं को समर्पित करते हुए उन कामों को करना होगा जिसे परमेश्वर आपसे करने के लिए कहते हैं। तब आपके भीतर निश्चय ही एक बढ़ा बदलाव आएगा! बिना विश्वास के, किसी भी प्रकार का बाइबल पढ़ना या अध्ययन करना परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता है। यदि हम बाइबल पढ़ें व अध्ययन करें और उसके अनुसार काम न करें तो कोई लाभ नहीं है। बाइबल पढ़ने या अध्ययन करने के बाद आपको अपने से यह प्रश्न पूछना चाहिए " परमेश्वर मुझसे किन बातों की प्रतिक्षा करते हैं? कोई सी प्रतिक्रिया परमेश्वर को प्रसन्न करती है? जिन बातों को मैंने बाइबल में से पढ़ा है परमेश्वर उसके द्वारा मुझसे क्या करवाना चाहता है?"

" यीशु क्या करेगा" प्रश्न के बारे में सोचना कोई कल्पना मात्र नहीं है, बल्कि यह एक बाइबल की वास्तविकता है:" यीशु वास्तव में क्या शिक्षा देता, आज्ञा देता, मना करता और वास्तव में क्या करता है?" यीशु क्या करेंगे जैसे प्रश्नों के सन्दर्भ हमारा जवाब हमारी कल्पनाओं पर आधारित नहीं वरन बाइबल में प्राप्त परमेश्वर के प्रकाशनों पर आधारित होना चाहिए।

ख. प्रेरणा: बाइबल की शिक्षाओं का इस्तेमाल करना क्यों महत्वपूर्ण है?

बाइबल में, आज्ञाकारिता मसीहियों के जीवन के ज्यादातर महत्वपूर्ण क्षेत्रों से जुड़ी हुई है।
खोजें और चर्चा करें। निम्नलिखित अनुच्छेदों में मसीही के जीवन के किस क्षेत्र से आज्ञाकारिता जुड़ी हुई है?

1. मत्ती 7:21-22। आज्ञाकारिता उद्धार पाने के लिए जरूरी है।

ध्यान दें। बाइबल में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का अर्थ हमेशा नया जन्म पाने (यूहन्ना 3:3-8)या उद्धार पाने(मरकुस 10:2-27)के समान होता है। इसका अर्थ यह नहीं की आपको कोई भला काम करने की वजय से उद्धार प्राप्त हुआ है(इफिसियों 2:8-10)। परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हुए परमेश्वर पिता आपको बचाता है। यूहन्ना 6:27-29 में, यीशु मसीह पर विश्वास करना परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना है, जिसे परमेश्वर पिता ने ही भेजा है।

2. मत्ती 7:24-27। एक बुद्धिमान व्यक्ति बनने के लिए आज्ञाकारी होना जरूरी है।

ध्यान दें। आज्ञाकारिता के बिना ज्ञान प्राप्त करना मूर्खता है। लेकिन जब हम ज्ञान का इस्तेमाल करते हैं तो उसे बुद्धि कहा जाता है।

3. लूका 6:46 पढ। मसीह की प्रभुता के लिए आज्ञाकारिता का होता बहुत महत्वपूर्ण है।

ध्यान दें। आज्ञाकारिता यीशु मसीह के प्रति आपकी निष्ठा को साबित करती है। यह साबित करती है कि यीशु मसीह वास्तव में आपके राजा और प्रभु हैं। आज्ञाकारिता आत्मा से परिपूर्ण जीवन का प्रत्यक्ष चिन्ह है।

4.लूका 6:47-49 पढ़ें। आज्ञाकारिता स्थिरता और शक्ति के लिए जरूरी है।

ध्यान दें। आपके मसीही जीवन व सेवकाई की मज़बूत बुनियाद रखने के लिए आज्ञाकारिता बहुत ज़रूरी है। केवल यीशु मसीह की शिक्षाओं का अपने जीवन में इस्तेमाल करने पर ही आपका मसीही जीवन उन्नति कर सकता है, आप अपने जीवन की कठिन परिस्थितियों का सामना कर सकते और पाप के ऊपर विजय प्राप्त कर सकते हो।

5. याकूब 2:17,22 पढ़ें। विश्वास करने के लिए आज्ञाकारिता बहुत महत्वपूर्ण है।

ध्याद दें। आज्ञाकारिता साबित करती है कि आपका विश्वास सच्चा है। आज्ञाकारिता से आपका विश्वास सजीव बनता व आपके जीवन में प्रभाव डालता है। बिना आज्ञापालन के आपका विश्वास केवल दिमागी विश्वास या मृतक विश्वास है।

6. यूहन्ना 14:21,23। प्रेम करने के लिए आज्ञाकारिता महत्वपूर्ण है।

ध्यान दे। यीशु मसीह की आज्ञाओं का पालन करते हुए आप, प्रदर्शित करते हैं कि आप वास्तव में उससे प्रेम करते हैं। आज्ञाकारिता एक रास्ता है जिसके द्वारा आप परमेश्वर के प्रेम व उसकी उपस्थिति को महसूस करते हैं।

7. इब्रानियों 10:35-36। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं व उसके प्रतिफल का पाने के लिए आज्ञाकारिता बहुत ज़रूरी है।

ध्यान दें। आपको परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञाएं की गयी आशीषें आज्ञा पालन करने पर ही प्राप्त होती हैं।

8. 1 यूहन्ना 3:22 पढ़ें। प्रार्थना के लिए आज्ञाकारिता बहुत जरूरी है।

ध्यान दें। जब आप परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और उसको भाने वाले काम करते हैं, केवल तब ही आपको आपकी प्रार्थनाओं के उत्तर मिलते हैं।

9.मत्ती 28:18-20 पढ़ें। एक चेला बनने के लिए भी आज्ञाकारिता बहुत जरूरी है।

ध्यान दें। जब आप यीशु की आज्ञा का पालन करते हैं, तभी आप यीशु के सच्चे चेले हैं।

सार। परमेश्वर आपको बाइबल केवल सत्य को जानने के लिए ही नहीं परन्तु आपके जीवन को परिवर्तित करने के लिए दी है! बाइबल की शिक्षाओं का इस्तेमाल करने को उद्देश्य ज़्यादा से ज़्यादा मसीह की समानता में बढ़ना है।

ग. तरीका: बाइबल में प्राप्त शिक्षाओं (सत्यों) के सम्भव इस्तमाल पर कैसे ध्यान दें।

1. उचित तरीके से बाइबल के अर्थ को समझाएं।

सिखाएं। बाइबल में प्राप्त शिक्षाओं को इस्तेमाल करने से पहले, आपको बाइबल के अनुच्छेद को सही तरीके से समझना बहुत जरूरी है। 29 अध्याय को देखें। बाइबल का अर्थ समझाने के लिए चार नियम निम्नलिखित हैं जो अभ्यास करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

बाइबल अचूक है।

बाइबल में पाये जाने वाले प्रकाशन सदैव सत्य हैं (मत्ती 24:35)। हालांकि बाइबल के सिद्धान्त (मत्ती 24:35)अचूक हैं, लेकिन इन सिद्धान्तों के आधार पर हमारी समझ व हमारे काम सीमित और कई बार अविश्वसनीय होते हैं, क्योंकि हम पाप और असिद्ध लोग हैं।

बाइबल का केवल एक ही मतलब होता है।

परमेश्वर सत्य है (तीतुस 1:2) और वह अपनी योजनाओं को स्पष्टता से प्रगट करना चाहता है। बाइबल सत्य है (यूहन्ना 17:17)। अत: बाइबल के किसी भी खण्ड का दोहरा मतलब नहीं है। बाइबल में पाये जाने वाले शब्द केवल वही अर्थ प्रस्तुत करते हैं जिन्हें स्वयं परमेश्वर ने निर्धारित किया है। जब आप बाइबल पढ़ते हैं तो, बाइबल में परमेश्वर की इच्छा को जानने की कोशिश किया करें।

बाइबल अपना ही खण्डन नहीं करती।

बाइबल एकता व एक प्रकाशन है। पुराना नियम व नया नियम एक दूसरे के पूरक हैं। पुराना नियम नये नियम के लिए ज़मीन तैयार करता है और नया नियम, पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों को पूरा करता है। बाइबल के भीतर परमेश्वर के प्रकाशन में एक प्रगति है। इस लिए पुराने नियम का स्पष्टीकरण हमेशा नये नियम के प्रकाश में होकर करें। और बाइबल के हर एक खण्ड की व्याख्या पूर्ण बाइबल को ध्यान में रखते हुए करें।

बाइबल स्वयं अपना अर्थ बताती है।

प्रतीकात्मक उपदेश, दृष्टान्त, कविताएं और भविष्यद्वाणियों को उनके अपने नियमों के आधार पर समझाना चाहिए। बार बार दोहरायी जाने वाली शिक्षाओं को प्राथमिकता प्रदान करनी चाहिए। आसान शिक्षाएं अस्पष्ट शिक्षाओं को समझाने में सहायता करती है। नये नियम की शिक्षाएं, पुराने नियम की भविष्यद्वाणियां का खुलासा करती हैं।

2.विभिन्न सम्भावित अभ्यासों पर ध्यान देना ।

सिखाएं। किसी भी एक शिक्षा को अपने जीवन में इस्तेमाल करने से पहले हमेशा सभी सम्भावित अनुप्रयोगों के बारे में जानकारी हासिल करने का प्रयास करें। छोटे समूह में विचार विमर्श करके एक अनुच्छेद में पायी जाने वाल सभी सम्भावित उपयोगी शिक्षाओं की सूची तैयार करें।

(1) एक सच्चाई को विभिन्न तरीकों से इस्तेमाल किया जा सकता है।

याद रखें कि अभ्यास वह प्रतिउत्तर है जिसकी अपेक्षा परमेश्वर करता है। हालांकि बाइबल के खण्ड में एक खास सत्य केवल एक सत्य होता है, लेकिन उस सत्य का अलग अलग परिस्थितियों में अलग अलग तरीकों से इस्तेमाल किया जा सकता है। एक शिक्षा को बहुत तरीकों से उपयोग में लाया जा सकता है। लेकिन, ये तरीके कभी भी बाइबल की सच्चाई का खण्डन नहीं करते।

निर्गमन 20:15 **पढ़ें।**

चर्चा करें। इस आज्ञा के भिन्न पहलुओं और उपयोगों पर चर्चा करें।

ध्यान दें। इस एक सत्य के निम्नलिखित विभिन्न उपयोग हैं:

- एक दुकान में, आप बिक्री के लिए रखे हुए समान में से कुछ चुरा नहीं सकते।
- अपने कार्यालय में, आप अपनी कम्पनी के पैसों का गबन नहीं कर सकते।
- अपने घर में बच्चे बिस्कुट नहीं चुरा सकते।
- मास मिडिया जगत में, आप सर्वअधिकार प्राप्त किये हुए किसी संगीत या लेख को नहीं चुरा सकते।

इसी तरह से आप जितनी शिक्षाओं या सत्यों के बारे में पढ़ते हैं उनके अलग अलग उपयोगों पर गौर करें और उन्हें लिख लें।

(2) वे प्रश्न जो आपकी भिन्न उपयोगों की खोज करने में सहायता करते हैं:

- **"परमेश्वर मुझे क्या बताना चाहते हैं?"** यह भिन्न अनुप्रयोग **ज्ञान** के क्षेत्र में हैं।

आप निम्न बातों पर गौर कर सकते हैं: "क्या इसमें सीखने के लिए कोई नयी वास्तविकता है?" "क्या इसमें ध्यान देने लायक कोई परिणाम है?" "क्या इसमें सीखने के लिए कोई शिक्षा है?" "क्या इसमें ग्रहण करने लायक कोई प्रकाशन है?" "क्या इसमें याद करने के लिए कोई सच्चाई है?

- **परमेश्वर मुझे क्या विश्वास दिलाना चाहते हैं**? यह भिन्न उपयोग **विश्वास** के क्षेत्र में हैं।

आप निम्न बातों पर गौर कर सकते हैं: "क्या यहां पर कोई विश्वास करने वाली बात(सत्य) है?" "क्या यहां पर विचार विमर्श करने के लिए कोई मुद्दा है?" "क्या यहां पर दाव करने के लिए प्रतिज्ञा है?""क्य कोई ऐसा क्षेत्र है जहां पर परमेश्वर चाहते हैं कि मैं उस पर विश्वास करूं?

- **परमेश्वर मुझे क्या बनाना चाहते हैं?** यह भिन्न अनुप्रयोग **चरित्र** के क्षेत्र में हैं।

आप निम्न बातों पर गौर कर सकते हैं:"क्या यहां पर किसी सदगुण को विकसित किया जा सकता है?" क्या यहां पर किसी प्रवृति को बदलने की जरूरत है?" "क्या यहां पर किसी भावना को प्रगट करना या नियन्त्रण करना चाहिए?" "क्यां इसमें स्वीकार करने योग्य कोई प्रोत्साहन है?" "क्या यहां पर अभ्यास करने के लिए कोई चारित्रिण गुण है?"

- **परमेश्वर मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?** यह भिन्न अनुप्रयोग **व्यवहार** के क्षेत्र में हैं।

आप निम्नलिखित बातों पर गौर कर सकते हैं: " क्या इस खण्ड में आज्ञापालन करने के लिए कोई आज्ञा है?" "क्या इसमें अपने जीवन में इस्तेमाल करने के लिए कोई शिक्षा है?" "क्या इसमें सावधान रहने के लिए कोई चेतावनी दी गयी है?" " क्या इसमें कोई चुनाव या निर्णय लेना है?" " क्या यहां किसी बुरी आदत को छोड़ने के लिए कहा गया है?" "क्या यहां पर किसी आदत को शुरू करने के बारे में बताया गया है?" " क्या यहां पर किसी रिश्ते को बहाल करने की बात की गयी है?" "क्या यहां पर किसी पाप को नज़रअन्दाज़ किया जा रहा है?" "क्या यहां पर किसो का अनुसरण किया जा रहा है?" "क्या इसमें परमेश्वर की स्तुति व धन्यवाद करने की कोई वजह है?"

(3) विभिन्न तरह के अनुप्रयोग ।

- कई अनुप्रयोग किसी खास क्रिया को रोक देते हैं। उदाहरण के लिए, आप गन्दी किताबों को पढ़ना बन्द कर देते हैं।
- कई अनुप्रयोग किसी खास क्रिया की शुरूआत करते हैं। उदाहरण के लिए, आप अच्छे दोस्तों से मिलना प्रारम्भ कर देते हो।
- कुछ अनुप्रयोग किसी क्रिया को बढ़ाते या किसी को कम कर देते हैं। उदाहरण के लिए, आप अपने बच्चों व पत्नि के साथ में ज्यादा समय बिताते हैं या आराम दायक वस्तुएं खरीदनें में बहुत कम पैसे खर्च करते हैं।

- कई अनुप्रयोगों को बहुत जल्दी लागू कर दिया जाता है। लेकिन कई प्रयोग बदलाव की एक लम्बी प्रक्रिया का हिस्सा होते हैं। उदाहरण के लिए, आप अपने जीवन की किसी आदत या स्वभाव को बदलना चाहते हैं। इस आदत या स्वभाव को बदलने में समय लगता है। इसमें शायद महीने या वर्षो भी लग सकते हैं। बदलाव की इस प्रक्रिया का नीचे दिये गये शब्दों में उचित ढंग से वर्णन किया गया है।

आप विचार बोते हैं तो आपको काम की फसल मिलती है।
जब आप काम बोते हैं तो आपकों आदत काटने को मिलती ह।
जब आप आदत बोते हैं तो,आपको चरित्र की प्राप्ति होती है।
जब आप चरित्र बोते हैं तो आपको, आपकी मंजिल मिलती है।

घ. तरीका : बाइबल की सच्चाईयों को अपने जीवन का 'व्यक्तिगत अनुप्रयोग' कैसे बनाएं।

सिखाएं। आप जिस बाइबल अनुच्छेद को पढ़ या उसका अध्ययन कर रहे हैं, उसमें से खोजने के बाद सम्भावित सत्यों के अनुप्रयोग की सूची बनाने के बाद, एक अनुप्रयोग का चुनाव करने जिसे आप आने वाले सप्ताह में निजी तौर पर अभ्यास करना चाहते हैं। ?

1.एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग का चुनाव करें।

निम्नलिखित प्रश्नों को पूछने के द्वारा आप व्यक्तिगत अनुप्रयोग का चुनाव कर पाते हैं,"परमेश्वर मुझसे किस प्रकार के प्रतिउत्तर की अपेक्षा करते हैं?" प्रार्थना के साथ अपनी तैयार सूची में से किसी एक सम्भव अनुप्रयोग का चुनाव करें।

2. अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को पांच निम्नलिखित कदमों में लिखें।

कदम 1. बाइबल का वचन। " मेरे अनुप्रयोग के सन्दर्भ में बाइबल का वचन क्या कहता है?" बाइबल के पद को लिखें। उदाहरण के तौर पर. निर्गमन 20:15।

कदम 2. बाइबल सत्य."बाइबल का यह खण्ड क्या कहता है?" इस खण्ड की उचित ढंग से व्याख्या करने की कोशिश करें और लिखें। उदाहरण के तौर पर परमेश्वर लोगों के चोरी करने से मना करता है।

कदम 3. मेरी ज़रूरत। "परमेश्वर मुझसे क्या कह रहे हैं?" "इस सत्य के आधार पर मेरी वर्तमान ज़रूरत क्या है?" "मैं इस सच्चाई किसी प्रकार अलग जीवन व्यतीत कर रहा हूँ?" "यह ज़रूरत मुझे किस प्रकार बदलने के लिए प्रेरित करती है?" " किस प्रकार से यह सत्य मेरी जरूरत के क्षेत्र में मुझे प्रगति करने के लिए उत्साहित करता है?" लिखें कि परमेश्वर आप में किस प्रकार का बदलाव देखना चाहते हैं। उदाहरण के तौर पर परमेश्वर ने मुझे दिखाया कि मैं अपने स्वामी का समय चुरा रहा था।

कदम 4. मेरा अनुप्रयोग। "परमेश्वर मुझे क्या बताना,विश्वास दिलाना, बनाना, या विशेषरूप में करवाना चाहते हैं?" उन कामों की एक सूची तैयार करें जो परमेश्वर आपसे करवाना चाहते हैं। अपने अनुप्रयोगों को सरल, समझने योग्य और यथार्तवादी और किया जा सकने वाला रखें। यदि आप स्वभाव, आदत या चरित्र को सुधारने के क्षेत्र में अनुप्रयोग करना चाहते हैं, तो आप पहले से ही योजना तैयार कर ले कि आप इस काम के लिए कितना समय खर्च करना चाहते हैं। उदाहरण के लिए. मैंने परमेश्वर के साथ यह वाचा बांधी कि मैं ठीक समय पर अपने कार्यालय में काम पर जाऊँगा और जितना समय मुझे वहां काम करना चाहिए उतना काम किये बिना अपने कार्यालय को नहीं छोड़ूगां।

कदम 5. मेरी प्रार्थना। "परमेश्वर को प्रतिउत्तर देते हुए मेरी प्रार्थना क्या है?" संक्षेप में लिखें कि आपने परमेश्वर से क्या कहा और उससे क्या मांगा। उदाहरण के लिए हे स्वर्गीय पिता। मेरी मालिक के समय को चुराने के लिए मुझे क्षमा करें। मुझे अपने कार्यालय में पूरा समय काम करने में सहायता करें।

3. अपने बहुमूल्य निजी अनुप्रयोग को जांचें।

- यदि हो सके तो, कोशिश करें कि आप अपने निजी अनुप्रयोग को इस्तेमाल करें। उदाहरण के लिए:
- आप अपने अनुप्रयोगों को अपने मित्र या मार्गदर्शक के साथ बांट सकते हैं, जो परख कर आपको तब तक उत्साहित कर सकता है जब तक कि आपका काम समाप्त न हो जाए।

- आप अपने अनुप्रयोगों को प्रार्थना की सूची में लिख सकते हैं और लगातार उनके लिए प्रार्थना कर सकते हैं।
- आप दर्पण पर कोई चिन्ह लगा सकते हैं जो आपके आपके कामों को पूरा करने की याद दिलाता रहे।
- बीच बीच में आप अपना मूल्यांकन खुद भी कर सकते हो। जिसमें से एक मूल्याकन का क्षेत्र यह होना चाहिए कि आपके व्यक्तिगत अनुप्रयोगों ने आपकी किस प्रकार मदद की है।

ड. अभ्यास : बाइबल की सच्चाई पर आधारित कामों को लिखें।

निर्देश: निम्नलिखित अभ्यास को एकान्त में या छोटे समूह के साथ में करें। यह एक अभ्यास है जिसके तहत आप सम्भावित कामों की सूची को एकत्र करने का प्रयास करते हैं। और यह एक अभ्यास जिसमें आप पांच कदमों के तरीके का इस्तेमाल करते हुए निजी अभ्यास को लिखना है।

1. सम्भावित कामों की एक संक्षिप्त सूची तैयार करने का अभ्यास करें।

नीतिवचन 3:1-10 पढ़ें।

चर्चा करें। निम्नलिखित वचनों में कौन कौन से सम्भावित अनुप्रयोग हैं? ध्यान दें। (अभ्यासों के कुछ उदाहरण नीचे दिये गये हैं। लेकिन इन पदों में और भी अधिक अभ्यास करने की सम्भावना हो सकती है)

नीतिवचन 3:1-2

एक सम्भावित अभ्यास शिक्षा या आज्ञा को याद करना है।

अन्य सम्भावित अभ्यास है कि जब कोई प्रचार कर रहा हो या शिक्षा दे रहा हो तो आप मुख्य बातों को लिखें।

नीतिवचन 3:3-4

एक सम्भव अभ्यास यह भी है कि आप किसी के प्रति प्रेमपूर्वक कार्य करने के द्वारा उसे अपना प्रेम प्रगट कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, मैं अपने बच्चों के साथ पार्क में घूमने जाकर उन पर अपने प्रेम को प्रगट करता हूँ। दूसरा सम्भावित अभ्यास किसी के प्रति विश्वासयोग्यता से भरा हुआ काम करके हम अपनी विश्वासयोग्यता को प्रगट कर सकते हैं। उदाहरण, मैं लगातार प्रार्थना करने के द्वारा परमेश्वर को अपनी विश्वासयोग्यता प्रदर्शित करता हूँ।

नीतिवचन 3:5-6

एक सम्भावित अभ्यास है कि जिद्दी या स्वावलम्बी बनने की बजाय बुद्धिमानों की युक्तियों को सुना जाए। एक अभ्यास यह भी है कि मैं किसी भी काम को करने या निर्णय लेने से पहले हर बार प्रार्थना करूँ।

नीतिवचन 3:7-8

एक सम्भावित अभ्यास, गलत स्थानों पर जाने से बचना है।

एक अभ्यास यह भी है कि मैं ऐसे बुरे मनुष्य से बचने का प्रयास करता हूँ जो मुझ पर बुरा प्रभाव डालने का प्रयास करता है।

अन्य सम्भावित अभ्यास किसी गलत व नुकसान देने वाली आदत को छोड़ना है

नीतिवचन 3:9-10

एक सम्भावित अभ्यास किसी मसीही सेवकाई को प्रति माह एक निश्चित राशि देना है।

एक सम्भावित अभ्यास अपने घर को दूसरे मसीहियों के साथ मिलकर प्रार्थना के लिए उपलब्ध कराना।

2. पाँच कदमों वाले तरीके के द्वारा व्यक्तिगत अभ्यास को लिखने का प्रयोग करें।

विभाजित करें। बड़े समूह को दो दो के छोटे समूह में विभाजित कर दें।

चुनें: हर एक जोड़ा ऊपर लिखी हई अभ्यास की सूची में से एक अभ्यास करने वाले कार्य को चुनाव कर ले।

लिखें: पांच कदमों के तरीके का इस्तेमाल करते हुए हर एक जोड़ा एक व्यक्तिगत अभ्यास को लिखे।

बाटें। हर एक जोड़ा अपन निजी अभ्यास को पूरे समूह के सामने पढ़ें। (निम्नलिखित उदाहरण को देखें)

कदम 1. बाइबल का पद। "मेरे अभ्यास का बाइबल आधारित स्रोत क्या है?" नीतिवचन 3:5-6, " तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा।"

कदम2. "बाइबल का यह खण्ड क्या कहना चाहता है?" केवल सोचने और करने की बजाय, मसीहियों को विचार करके काम करने से पहले प्रार्थना करनी चाहिए!

कदम 3. मेरी जरूरत। "परमेश्वर मुझसे क्या कहते हैं?" " इस सत्य के प्रकाशन में मेरी वर्तमान जरूरत क्या है?"
मैं प्रवर्तक हूँ। मैं काम करने से पहले परमेश्वर से न शक्ति या प्रेम या किसी बात को पूछने के लिए प्रार्थना नहीं करता। मैं परमेश्वर पर अधिक निर्भर होना चाहूँगा।

कदम 4. मेरा अभ्यास। " परमेश्वर मुझे विशेष रूप में क्या बताना, विश्वास दिलाना, बनाना और कराना चाहते हैं?"
मेरी योजना यह है कि मैं किसी भी काम को करने से पहले हर एक महत्वपूर्ण गतिविधी या जिम्मेदारी के लिए प्रार्थना करूंगा। मैं दो सप्ताह के लिए यह प्रार्थना करना चाहता हूँ।

कदम 5. मेरी प्रार्थनां। "परमेश्वर को प्रतिउत्तर देते हुए मेरी प्रार्थना क्या है?"
(हे स्वर्गीय पिता, मुझे अपने पर भरोसा रखने से दूर रख तथा कोई निर्णय लेने से पहले, लोगों से बात करने से पहले या कहीं यात्रा करने से पहले प्रार्थना करने में मेरी सहायता कर। मेरे जीवन के सभी क्षेत्रों में तेरी उपस्थिति को महसूस करने में मेरी सहायता कर, यीशु के नाम में, आमीन!)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[प्रतिक्रियाएं]* **परमेश्वर के वचन के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में प्रार्थना**

आज सीखी गयी शिक्षाओं की प्रतिक्रिया के रूप में अपने समूह में परमेश्वर से ***संक्षिप्त*** प्रार्थना करें।
या समूह को दो दो या तीन तीन में बाँट कर सीखी गयी बातों पर प्रतिक्रिया देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2मिनट) *[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें।
   किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ"व्यवहारिक अभ्यास" की शिक्षाओं का इस्तेमाल करते हुए प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: गिनती 11:1-14:45 में से हर रोज़ आधा अध्याय पढ़ते हुए परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। प्रश्न पूछने वाले तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्ययन। अगले बाइबल अध्ययन की घर पर तैयारी करें। 1 पतरस 5:1-7।विषय: कलीसिया की अगुवाई। बाइबल अध्ययन के पाँचों चरणों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. प्रार्थना इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे को अद्यपन करके रखें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा सामग्री को शामिल करें।